अधीर हिंदू / विकास नारायण राय

भला कौन ऐसा अभागा होगा
जिसने हिंदू वचनों से
अधीर हिंदुओं के बारे में न सुना हो
वे हिंदू
जो आज राफ़ेल के बिना
अपने घरों-चौखटों में ही
असुरक्षित हो जाते हैं
उसे नामधारी सूट में न देखें
तो कपड़े फेंक-फाँक कर
बेचैनी में नंगे सो जाते हैं
वे हिंदू
जो सीवर और खदान में उतरे
मज़दूर को भूल जाते हैं
कश्मीर में सिपाही के क़त्ल पर
गर्व से फ़ूल जाते हैं

सचमुच घटा है यह सब
डारविन के विरोध में घटा है
खाँटी कल्पना नहीं कि
बस पैदा होने के लिये रो देंगे
या बस ज़माने के माथे से
तीन तलाक़ और चार शादी का कलंक धो देंगे
टेस्ट ट्यूब में कौरव ही कौरव
पैदा करने देंगे ब्रह्मा को
द्रोपदी की जाएगी
जब-जहाँ निर्वस्त्र
वन्देमातरम चिल्लायेंगे
तिरंगा लहरायेंगे

सचमुच
चुनाव दर चुनाव
अयोध्या में
राम मंदिर बनाते जायेंगे
विरोधी गठबंधन को
सीबीआई से डराते जायेंगे
बीच में गाय-वाय लाते जायेंगे
चाय पर चर्चा चलाते जायेंगे
जान पर ख़तरा बताते जायेंगे
हिंदू वचन निभाते जायेंगे

हिंदुओं का काला धन लाने
दोस्तों का काला धन लाने
चंटूओं-मंटूओं को मनाने
भागे हुओं की वापसी कराने
उन्हें मन की बात सुनाने
उनका चौकीदार बन जाने
गीता के संदेश में
समाहित हो जाने
वे एक बार और
सिर्फ़ एक बार और
अनेक बारों की तरह
एक बार और
भारत से चले जायेंगे
इस बार वापस नहीं आने दिये जायेंगे

भारतीय शादी में डिशेज और उन्हें खाने वालों को देखकर बेहोश हुआ विदेशी नागरिक

मंगलवार की रात को एक पारंपरिक भारतीय शादी में भोजन और उन्हें खाने वालों को देखकर एक विदेशी नागरिक बेहोश हो गया। इस जर्मन नागरिक ने बाद में पुलिस को दिए बयान में कहा कि शादी में 105 तरह की डिशेज देखकर वह डिप्रेशन में चला गया और सुध-बुध खो बैठा।

मैक्सिम पोर्की नामक यह विदेशी अपने एक आईएएस अधिकारी मित्र के बेटे के मैरिज रिसेप्शन में भाग लेने खास तौर पर जर्मनी से भारत आया था। एक निजी अस्पताल में डिप्रेशन का इलाज करवा रहे मैक्सिम ने बताया, "रिसेप्शन में हर जगह बस एक ही चीज नजर आ रही थी- खाने के स्टॉल। मैं एक स्टॉल पर गया तो वहां भारतीय शैली में चाइनीज खाना परोसा जा रहा था- मंचुरियन, नूडल्स पता नहीं क्या-क्या। मैंने उन्हें खाना शुरू ही किया था कि मेजबान ने टोक दिया। कहा, 'मैक्सिम थोड़ा ही खाना। ये तो स्टारटर है।' वहां 20 तरह के स्टारटर थे। मेरा तो वहीं पेट भर गया।"

कोलंबा कालीधर

उसने आगे बताया, "फिर मेरे मेजबान मुझे मेन कोर्स पर ले गए। वहां दस तरह के सलाद, अचार, पापड़। पच्चीस तरह की सब्जियां थीं। मुझे तो उनके नाम भी याद नहीं। फिर मैंने देखा कि एक जगह ढाबा लिखा हुआ था। वहां भी कई तरह की रोटियां और सब्जियां थीं। फिर स्वीट्स के स्टाल, मानो मिठाई की दुकान सजी हो।" मैक्सिम ने बताया, "मुझे यह देखकर ही बेहोशी छाने लगी थी, लेकिन मैं अपने आप को कंट्रोल किए हुए था। लेकिन फिर मैंने ऐसे कई लोगों को देखा जिन्होंने अपनी प्लेटों में कम से कम 25 आइटम रख रखे थे। सब दबा के खाए भी जा रहे थे। यहां तक भी मैं कंट्रोल करने की कोशिश कर रहा था। मैंने सोचा पानी पी लूं तो कुछ जी हल्का हो जाएगा। पानी पीने गया तो वहां लोगों के बोल सुनकर मेरे तो होश ही उड़ गए। इसके बाद मैंने खुद को इसी अस्पताल में पाया।"

तो आपने क्या सुना था? इसके जवाब में मैक्सिम ने बताया, "25-30 आइटम खाने के बाद जब लोग पानी पीने आए तो आपस में बात कर रहे थे- अरे यार, खाने में मजा ही नहीं आया। इससे अच्छा खाना तो गोयलजी के यहां खाया था। बस मैंने यही आखिरी शब्द सुने थे। इसके बाद से ही मैं डिप्रेशन में हूं।

जाति व्यवस्था का कड़वा सच

1. जिन्होंने चमड़े से जूते, चप्पल बनाने का आविष्कार कर, समस्त मानव जाति के पैरों को सुरक्षित, सुन्दर और निरापद बनाकर समाज सेवा की, वे लोग श्रेष्ठ नहीं।

2. जिन्होंने सम्पूर्ण पर्यावरण की सफाई करके सुन्दर और स्वच्छ समाज बनाकर समाज की सेवा की, वे लोग श्रेष्ठ नहीं।

3. जिन्होंने लकड़ी से फर्नीचर (खाट, पलंग, आलमारी, मेज, कुर्सी, दरवाजे आदि) का आविष्कार कर, समाज सेवा की, वे लोग श्रेष्ठ नहीं।

4. जिन्होंने मिट्टी के बर्तन बनाने का आविष्कार करके समाज सेवा की, वे लोग श्रेष्ठ नहीं।

5. जिन्होंने बीज से खेती के औजारों का (हल, खुरपी, फावड़ा आदि) आविष्कार करके "अन्न पैदा करने की तकनीक" देकर भूखों मरते, जंगलों में कन्द-मूल और फल के लिए भटकते मानव की, समाज सेवा की, वे लोग श्रेष्ठ नहीं।

6. जिन्होंने लोहे से "मानव हितकारी यन्त्रों" का आविष्कार किया, साग सब्जी उगाकर या पशु पालन से समाज सेवा की, वे लोग श्रेष्ठ नहीं।

7. जिन्होंने घर, इमारतें बनाने का आविष्कार करके, प्रकृति और मौसम के क्रूर थपेड़ों से मानव को बचाकर समाज सेवा की, वे लोग श्रेष्ठ नहीं।

8. जिन्होंने रेशम, कपास और तमाम प्राकृतिक रेशों से कपड़े बुनने का आविष्कार कर मानव को जो, जंगलों में नंगे, ठंड और भीषण गर्मी में पेड़ की छाल पत्ते और मरे जानवरों की खाल लपेटने को बाध्य था, को सुन्दर वस्त्र देकर सभ्य और सुसंकृत बनाकर समाज सेवा की, वे लोग श्रेष्ठ नहीं।

9. जिन्होंने नौकायें और बड़ी-बड़ी पानी के जहाज बनाकर यातायात को सरल बनाकर पूरे मानव सभ्यता को उन्नतिशील और ऐश्वर्यपूर्ण बनाकर, समाज सेवा की, वे लोग श्रेष्ठ नहीं।

10. जिन शिल्पकारों ने मिट्टी पत्थरों और तमाम प्राकृतिक संसाधनों से श्रेष्ठ, कलात्मक मूर्तियों का निर्माण करके इस समाज और दुनिया को कला और संस्कृति की अनन्त ऊँचाइयों पर पहुँचाकर कर समाज सेवा की, वे लोग श्रेष्ठ नहीं।

लेकिन जिन्होने लंबे समय से समाज को अंधविश्वास, ढकोसले, पाखंण्ड, लोक-परलोक, स्वर्ग-नरक, पाप-पुण्य, मोक्ष प्राप्ति, कपोल-राशिफल,कल्पित भविष्य-फल, पुनर्जन्म, जातिवाद, छूआ-छूत, अस्पृश्यता आदि नारकीय तमाम ढकोसलों के सहारे समाज को पीछे ढकेलकर समाज को अकर्मण्यता और भाग्यवादी बनाकर कर पीछे की तरफ ढकेलने वाले, वे ही आज तथाकथित जातिमात्र से श्रेष्ठ है, यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। भारत टैक्नोलोजी में पीछे इसी वजह से है कि यहां "नॉन टैक्निकल" जातियां, श्रेष्ठ और प्रभावशाली रहीं हैं और "टैक्निकल" जातियां भेदभाव से शोषित रहीं है।

- साइबर नज़र

FASHION.IN

Available all types of
ladies cotton kurties, Fancy Kurties,
Jegin, legin, Fancy Top,
T-Shirts, Trousers and imported
material in wholesale price.

SPECIALITY IN FANCY TOP & FANCY KURTIES

लेडीज कपड़ों पर भारी छूट
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें

Address : 5M/22, N.I.T. FARIDABAD NEAR DAYANAND WOMEN COLLEGE, ST. JOSEPH CONVENT SCHOOL ROAD . 9911489490

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

सहनशीलता का महत्व

आज के बदलते युग के परिदृश्य में यदि हम देखें तो पायेंगे कि मनुष्य के स्वभाव में दिन प्रतिदिन परिवर्तन आ रहा है। जैसे-जैसे तकनीकी सुविधाएँ बढ़ रही हैं मनुष्य सोचता है कि वह शक्तिशाली हो गया है और वह सभी नियमों से भी स्वतंत्र है। स्वयं को सर्वेसर्वा सोचने के कारण मनुष्य में सहनशक्ति का अभाव होता जा रहा है। अब हम प्रतिकूल परिस्थितियों में धैर्य व सहनशीलता का पाठ भूलते जा रहे हैं और प्रायः विकट परिस्थितियों में उलझ जाते हैं। वर्तमान समय में प्रायः लोगों का भोजन भी सात्विक नहीं रहा।

सात्विक भोजन ग्रहण न करने के कारण भी मनुष्य का मन विचलित और बुद्धि उत्तेजित रहती है। जब मन और बुद्धि शांत नहीं होंगे तो हम किसी भी कार्य का परिणाम उत्तम कोटि का नहीं दे पायेंगे और परिणाम अच्छा न होने पर फिर से मन विचलित होगा। इन परिस्थितियों से बचने के लिए हमें सहनशील बनना होगा। हमें सुनने की आदत डालनी होगी जिस व्यक्ति में भी सुनने की शक्ति अधिक है वह जीवन में अधिक सफल है क्योंकि वह व्यक्ति पहले धैर्य पूर्वक सारी बातों को सुनता है, समझता है फिर उस पर अपनी प्रतिक्रिया देता है। इस प्रकार वह व्यक्ति अधिक सजग होकर कार्य पूर्ण करता है क्योंकि पहले वह प्रत्येक विषय पर मनन करता है। मन व बुद्धि से दोनों से कार्य करता है, इस प्रकार सोच समझकर किया गया कार्य अवश्य ही सफल होता है। परन्तु इन सबके लिए सर्वप्रथम हमारा भोजन सात्विक होना चाहिए। सात्विक भोजन ही हमारे शरीर को पौष्टिकता प्रदान करता है। मन व बुद्धि को उत्तेजित नहीं करता, विवेक से सहनशीलता आती है। सहनशीलता हमें किसी भी प्रकार की परिस्थिति से जूझने की सही दिशा दिखाती है और उससे निकलने का साहस भी देती है। अतः मनुष्य के जीवन में सहनशीलता का अत्यधिक महत्व है। जिससे शांतिप्रिय समाज की स्थापना में सहयोग मिलेगा और हम निर्भय समाज की परिकल्पना कर पायेंगे।